Nakshatra Vatika

राजभवन देहरादून

u{k= okfVdk ,d lf{kIr ifjp;

Nakshatra Vatika
An Introduction...

आध्यात्मिक, प्राकृतिक और सांस्कृतिक विरासत के प्रतीक के रूप में राजभवन देहरादून में 'नक्षत्र वाटिका' की स्थापना की गई है। प्राचीन काल से धरती के ऊपर आकाश को 360 डिग्री में बाँटा गया है। यदि हम 360 डिग्री को 27 भागों में बाँटते हैं तो इसकी प्रत्येक इकाई 13.33 डिग्री (13 डिग्री 20 मिनट) के रूप में आती है। इस प्रत्येक इकाई का एक नक्षत्र बनाया गया है। अब यदि 360 डिग्री को 12 भागों (राशियों) में बांटते हैं तो प्रत्येक राशि चिह्न 30 डिग्री के रूप होता है। जिसे हम 12 अलग-अलग राशियों के नाम से जानते हैं।

प्रत्येक नक्षत्र को 4 चरण या पाद में समान रूप से विभाजित किया जाता है। इन नक्षत्रों की पहचान आसमान के तारों की स्थिति व विन्यास से की जाती है। जिस प्रकार समुद्र में प्रवाह मान जहाज की स्थिति देशांतर रेखा व्यक्त करती है उसी भांति पृथ्वी के निकट भ्रमण पिण्डों (ग्रहों) की स्थिति नक्षत्रों द्वारा व्यक्त की जाती है। नक्षत्र वाटिका में इन्हीं 27 नक्षत्रों से संबन्धित 27 पौधों को स्थान दिया गया है जो कि भारतीय आध्यात्म, प्राचीन ज्ञान और प्रकृति संरक्षण का अनूठा मिश्रण है।

इन्हीं 27 नक्षत्रों के माध्यम से भारतीय ज्योतिष में नवग्रहों और 12 राशियों की स्थिति और चाल का आंकलन किया जाता है। प्रत्येक ग्रह एवं राशि के लिए भी एक वनस्पति अथवा पौधे की पहचान की गई है। इसीलिये वाटिका में 9 ग्रहों, 12 राशियों से संबधित पौधों तथा त्रिगुणात्मक देव के प्रतीक के रूप में तीन पौधों, कुल 51 पौधों को स्थान दिया गया है। इन नक्षत्रों, ग्रहों तथा राशियों से सम्बन्ध रखने वाले वृक्षों के नाम आयुर्वेदिक, पौराणिक, ज्योतिषीय ग्रन्थों में मिलते है। इन ग्रन्थों में वर्णन है कि जन्म नक्षत्र के वृक्ष की सेवा व वृद्धि करने से मनुष्य का कल्याण होता है।

ऐसा माना जाता है कि प्रत्येक व्यक्ति को उसके नक्षत्र एवं राशि से सम्बन्धित पौधे को लगाकर उसकी देखभाल करनी चाहिए। यह भी माना जाता है कि यह सभी वृक्ष प्रजातियाँ अन्य प्रजातियों की तुलना में अधिक ऑक्सीजन प्रदान करती हैं और इसलिए इन वृक्षों के पास बैठने से सकारात्मक ऊर्जा उत्पन्न होती है। इन वृक्षों की प्रजातियाँ एंटीऑक्सीडेन्ड,फ्लेवोनोइड, तारपीन व टैनिन नामक द्वितीयक चयापचयों (Secondary metabolites) से समृद्ध हैं और इनका प्रयोग पारम्परिक उपचार प्रणालियों में व्यापक रूप से किया जाता है। राजभवन नक्षत्र वटिका के रूप में इन प्रजातियों के संरक्षण से जैव विविधता को समृद्ध करने की अनुपम पहल है।

The state of Uttarakhand is known for Himalayan culture and abundant forest wealth. As a symbol of the spiritual, natural and cultural heritage here, 'Nakshatra Vatika' has been established in Raj Bhavan Dehradun.

Since ancient times, the sky has been divided into 360 degrees and if we divide this into 27 parts, then each of its units comes at 13.33 degree (13 degree 20 minutes). Each of these units is called a Nakshatra.

Each Nakshatra is divided equally into 4 Charanas or Padas. These Nakshatras are identified by the position and configuration of the stars in the sky. Akin to the longitude line that expresses the position of a ship moving in the sea, the position of the moving objects (planets) near the Earth is expressed by the Nakshatras.

In Nakshatra Vatika, 27 plants related to these 27 constellations have been planted. This is a unique blend of Indian spirituality, ancient knowledge and nature conservation.

Through these 27 Nakshatras, the position and movements of the nine planets and 12 zodiac signs are assessed in Indian astrology. A plant has also been identified for each planet and zodiac sign. This is the reason there are a total of 51 species of flora at the Vatika. Plants related to 9 planets, 12 zodiac signs and as a symbol of divinity, there are three plants in the names of deities Brahma, Vishnu and Shiva.

The names of the trees related to these Nakshatras, planets and zodiac signs are found in Ayurvedic, mythological, astrological texts. It is further explained that by nurturing the tree of the birth constellation, the individual gains immense prosperity and good health. It is believed that every person should plant a flora, related to his Nakshatra and take care of it.

To further this, tree plantation also provides more oxygen hence positive energy is generated by sitting near these trees. These tree species are rich in secondary metabolites called antioxidants, flavonoids, turpentine and tannins and are widely used in traditional healing systems.

Conservation of these species in the form of Raj Bhavan Nakshatra Vatika is a unique initiative to enrich biodiversity.

u{k=k dk o'{kk dk
lf{klr ifjp;

u{k=k dk o'{kk dk
lf{klr ifjp;

1. **कुचिला**– मध्यम ऊँचाई का वृक्ष जो मध्य भारत के वनों में पाया जाता है। इसके टिकियानुमा बीजों में स्थित विष बहुत औषधीय महत्व का होता है।
2. **आंवला**– इसके फल को अमृत फल कहा गया है, जो विटामीन 'सी' का समृद्धतम् स्रोत है।
3. **गूलर**– बड़े आकार का छायादार वृक्ष है। शुक्रगृह की शान्ति में इसकी समिधा प्रयुक्त होती है।
4. **जामुन**– बहते जल क्षेत्रों के नजदीक आसानी से उगने वाला यह वृक्ष मधुमेह की श्रे ठतम औ ाधि है।
5. **खैर**– मध्यम ऊँचाई का कांटेदार वृक्ष है, जिसकी लकड़ी से कत्था बनता है।
6. **अगर**– भारत में यह उत्तर भारत के पूर्वी हिमालय के आस–पास पाया जाता है।
7. **बांस**– इसे गरीब की "इमारती लकड़ी" कहते हैं।
8. **पीपल**– अति पवित्र वृक्ष है और भगवान बुद्ध को इसी वृक्ष के नीचे बोधि प्राप्त हुई थी।
9. **नागकेसर**– मुख्य रूप से आसाम के आर्द्र क्षेत्रों में प्राकृतिक रूप से उगने वाला वृक्ष है, जिसकी लकड़ी अत्यधिक कठोर होती है।
10. **बरगद**– बट वृक्ष सावित्री व्रत में महिलाओं द्वारा पूजा जाने वाला बहुत बड़ा छायादार वृक्ष है।
11. **ढाक**– सूखे व बंजर क्षेत्रों में उगने वाला मध्यम ऊँचाई वाला वृक्ष है, जिसके फूलों से होली पर केसू का रंग बनता है। इसे "वन ज्वाला" (फ्लेम आफ द फारेस्ट) भी कहते है।
12. **पाकड़**– घनी शीतल छाया देने के लिये प्रसिद्ध वृक्ष।
13. **चमेली**– यह फूल–झाड़ी या बेल जाति से संबंधित है। भारत में इसकी 40 प्रजातियां अपने नैसर्गिक रूप में उपलब्ध है।
14. **बेल**– कठोर कवच के फल वाला मध्यम ऊँचाई का वृक्ष जिसकी पत्तियां शिवजी की पूजा में चढ़ाई जाती है।
15. **अर्जुन**– जलमग्न या ऊँचे जलस्तर वाले क्षेत्रों में आसानी से उगने वाला वृक्ष है। जिसकी छाल हृदय रोग की श्रेष्ठतम औषधि है।
16. **हर श्रृंगार**– इसे शेफाली, शिउली आदि नामो से भी जाना जाता है। इसका वृक्ष 10 से 15 फीट ऊँचा होता है। छायादार शोभाकार वृक्ष है।
17. **मौलश्री**– यह छायादार शोभाकार वृक्ष है।
18. **सेमल्**– सामान्यत: 'कॉटन ट्री' कहा जाता है। इसके लाल पुष्प की 5 पंखुड़ियाँ होती हैं। ये वसंत ऋतु के पहले ही आ जाती हैं।
19. **साल**– प्रदेश के तराई भांवर क्षेत्र में प्राकृतिक रूप से उगने वाला अति महत्वपूर्ण प्रकाष्ठ वृक्ष।
20. **सीता अशोक**– यह वृक्ष मूलरूप से स्त्रीजनक रोगों के लिए रामबाण है। इसके अलावा सांस संबंधी बीमारी में भी इसका उपयोग किया जाता है।
21. **कटहल**– मध्यम ऊँचाई का वृक्ष जिसके बृहद् आकार फल की सब्जी खाई जाती है।
22. **मदार**– बंजर शुश्क भूमि पर उगने वाली झाड़ी प्रजाति है।
23. **शमी**– छोटे कांटों वाला छोटी ऊँचाई का वृक्ष है, जिसे उत्तर प्रदेश में छ्योंकर व राजस्थान में खेजड़ी कहते है।
24. **कदम्ब**– भगवान कृष्ण की स्मृति से जुड़ा वृक्ष है जो आर्द्रक्षेत्रों में आसानी से उगता है।
25. **नीम**– ''गांव के वैद्य'' नाम से प्रसिद्ध औषधीय महत्व का वृक्ष है।
26. **आम**– भारत में फलों के राजा के नाम से प्रख्यात है।
27. **महुआ**– शुष्क पथरीली व रेतीली भूमि में उगने वाला वृक्ष। गरीबों में उपयोगिता के कारण इसे "गरीब का भोजन" नाम की उपमा दी जाती है।

नक्षत्रों के आराध्य एवं उनसे संबन्धित आराध्य वृक्षों के नाम

नक्षत्र : अश्विनी
आराध्य : अश्विनी कुमार

आराध्य वृक्ष का नाम
संस्कृत: कारस्कर | हिन्दी : कुचिला
वानस्पतिक: *Strychnos nux-vomica*

नक्षत्र: भरणी
आराध्य : यम

आराध्य वृक्ष का नाम
संस्कृत: धात्रि | हिन्दी : आंवला
वानस्पतिक: *Emblica officinalis*

नक्षत्र: कृत्तिका
आराध्य :अग्नि

आराध्य वृक्ष का नाम
संस्कृत: उदुम्बर | हिन्दी : गूलर
वानस्पतिक: *Ficus glomerata*

नक्षत्र: रोहिणी
आराध्य: ब्रह्मा

आराध्य वृक्ष का नाम
संस्कृत: जम्बू | हिन्दी : जामुन
वानस्पतिक: *Syzium cumini*

नक्षत्र: मृग शीर्ष
आराध्य: चन्द्र

आराध्य वृक्ष का नाम
संस्कृत: खादिर | हिन्दी : खैर
वानस्पतिक: *Acacia catechu*

नक्षत्र: आर्द्रा
आराध्य: शिव

आराध्य वृक्ष का नाम
संस्कृत: कृष्णागुरू | हिन्दी : अगर
वानस्पतिक: *Aquilaria agallocha*

नक्षत्र: पुनर्वसु
आराध्य: अदिति

आराध्य वृक्ष का नाम
संस्कृत: वंश | हिन्दी : बांस
वानस्पतिक: *Bambusa strictus*

नक्षत्र: पुष्य
आराध्य: गुरू

आराध्य वृक्ष का नाम
संस्कृत: अश्वत्थ | हिन्दी : पीपल
वानस्पतिक: *Ficus religiosa*

नक्षत्र: आश्लेषा
आराध्य: सर्प

आराध्य वृक्ष का नाम
संस्कृत: नागकेसर | हिन्दी : नागकेसर
वानस्पतिक: *Messua ferrea*

नक्षत्रः मघा
आराध्यः पितर

आराध्य वृक्ष का नाम
संस्कृतः वट | हिन्दी : बरगद
वानस्पतिकः *Ficus benghalensis*

नक्षत्रः पूर्वा फाल्गुनी
आराध्यः भग

आराध्य वृक्ष का नाम
संस्कृतः पलाश | हिन्दी : ढाक
वानस्पतिकः *Butea monosperma*

नक्षत्रः उत्तरा फाल्गुनी
आराध्यः अर्यमा

आराध्य वृक्ष का नाम
संस्कृतः प्लक्ष | हिन्दी : पाकड़
वानस्पतिकः *Ficus virens*

नक्षत्रः हस्त
आराध्यः सूर्य

आराध्य वृक्ष का नाम
संस्कृतः जाई | हिन्दी : चमेली
वानस्पतिकः *Jasminum auriculatum*

नक्षत्रः चित्रा
आराध्यः विश्वकर्मा

आराध्य वृक्ष का नाम
संस्कृतः बिल्व | हिन्दी : बेल
वानस्पतिकः *Aegle marmelos*

नक्षत्रः स्वाति
आराध्यः वायु

आराध्य वृक्ष का नाम
संस्कृतः अर्जुन | हिन्दी : अर्जुन
वानस्पतिकः *Terminalia arjuna*

नक्षत्रः विशाखा
आराध्यः इन्द्राग्नि

आराध्य वृक्ष का नाम
संस्कृतः परिजात | हिन्दी : हर श्रृंगार
वानस्पतिकः *Nyctanthes arbourtristis*

नक्षत्रः अनुराधा
आराध्यः मित्र

आराध्य वृक्ष का नाम
संस्कृतः बकुल | हिन्दी : मौलश्री
वानस्पतिकः *Mimusops elengi*

नक्षत्रः ज्येष्ठा
आराध्यः इन्द्र

आराध्य वृक्ष का नाम
संस्कृतः शाल्मलि | हिन्दी : सेलम
वानस्पतिकः *Bombax ceiba*

नक्षत्रः मूल
आराध्यः निॠती

आराध्य वृक्ष का नाम
संस्कृतः अश्वकर्ण | हिन्दी : साल
वानस्पतिकः *Sorea robusta*

नक्षत्रः पूर्वाषाढ़ा
आराध्यः जल

आराध्य वृक्ष का नाम
संस्कृतः अशोकमु | हिन्दी : सीता अशोक
वानस्पतिकः *Saraca asoca*

नक्षत्रः उत्तराषाढ़
आराध्यः विश्वदेव

आराध्य वृक्ष का नाम
संस्कृतः पनस | हिन्दी : कटहल
वानस्पतिकः *Artocarpus heterophyllus*

नक्षत्रः श्रवण
आराध्यः विष्णु

आराध्य वृक्ष का नाम
संस्कृतः अर्क | हिन्दी : मदार
वानस्पतिकः *Calotropis gigantea*

नक्षत्रः धनिष्ठा
आराध्यः वसु

आराध्य वृक्ष का नाम
संस्कृतः शमि | हिन्दी : छयोंकर
वानस्पतिकः *Prosopis spicigera*

नक्षत्रः शतभिष
आराध्यः वरूण

आराध्य वृक्ष का नाम
संस्कृतः कदम्ब | हिन्दी : कदम्ब
वानस्पतिकः *Anthocephalus kadamba*

नक्षत्रः पूर्वा भाद्रपद
आराध्यः अजैकपाद

आराध्य वृक्ष का नाम
संस्कृतः निम्ब | हिन्दी : नीम
वानस्पतिकः *Azadirachta indica*

नक्षत्रः उत्तराभाद्रपद
आराध्यः अहिर्बुधन्य

आराध्य वृक्ष का नाम
संस्कृतः आम्र | हिन्दी : आम
वानस्पतिकः *Mangifera indica*

नक्षत्रः रेवती
आराध्यः पूषा

आराध्य वृक्ष का नाम
संस्कृतः मधुक | हिन्दी : महुआ
वानस्पतिकः *Madhuca latifolia*